ग्रीष्म ऋतु और लोकगीत

-आकांक्षा

'सूरज री किरणा तपै जी, चंदा री निर्मल रात हो।
इंदर तो बरसावै जी, धरती तो निपजावै धान हो।'

प्रत्येक ऋतु का अपना राग और शृंगार होता है। बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर एवं हेमन्त के रूप में विभाजित ग्रीष्म ऋतु का आगमन बसंत के पश्चात और समापन वर्षा ऋतु से पहले होता है। ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार अप्रेल से जुलाई तक के माह एवं हिन्दू कलेण्डर के अनुसार चैत्र, बैसाख और ज्येष्ठ मास में गर्मी की तपन अनुभव की जाती रही है। भौगोलिक दृष्टिकोण से जब पृथ्वी सूर्य के निकट रहती है तब अत्यधिक गर्मी के कारण ग्रीष्म ऋतु होती है। इस ऋतु में वातावरण का तापमान प्राय उच्च रहता है। इसी क्रम में ऋतु परिवर्तन चलता रहा है क्योंकि परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है यदि परिवर्तन ही नहीं हो तो बसंत की बासंती बयार और शिशिर के तुषारपात का कोई मूल्य नहीं रह जाएगा। इस समय सूर्य भूमध्य रेखा से कर्क रेखा की ओर बढ़ता है जिससे तापमान में वृद्धि होने लगती है। प्रकृति के सौन्दर्य का शिल्पकार ईश्वर है जिसकी सुन्दरता अवर्णनीय है। यही प्रकृति पग-पग पर असना सौन्दर्य रूपी कोश लुटाती चलती है। पृथ्वी की अद्‌भुत सौन्दर्य-लीला ऋतुओं के रूप में दर्शनीय है तभी तो छह ऋतु बारी-बारी से आकर पृथ्वी को अपने ढंग से सज्जित कर मनुष्य को अमूल्य उपहार दे जाती है। इसीलिये प्रकृति और मनुष्य अन्योन्याश्रित है, एक-दूसरे के अभाव में दोनों ही सौन्दर्यविहीन है।

ग्रीष्म ऋतु में बसंत के चैतन्य और स्फूर्ति का स्थान आलस्य और क्लान्ति ले लेती है। घर से निकलने का मन ना तो मनुष्यों का करता है और ना ही पशु-पक्षियों का। गर्मी के प्रचंड रूप को देखकर कविवर जयशंकर प्रसाद कहते हैं-

'किरण नहीं,ये पावक के कण, जगती धरती पर गिरते हैं।'

बिहारी के शब्दों में ग्रीष्म ऋतु का वर्णन इस प्रकार है-

'बैठी रही अति सघन बन, पैंठी सदन तन मांह।
देखि दोपहरी जेठ की, छांहो चाहती छांह।

राजस्थान भी प्रकृति के इस शृंगार से अछूता नहीं रहा है। राजस्थान परम्पराओं, उल्लास और उत्सव की धरती है। 'धरती धोरां री' के उपनाम से ख्याति प्राप्त यह मरुप्रदेश अनेक प्राकृतिक विभिन्नताओं से सराबोर है। एक और विशाल थार का मरुस्थल दूसरी तरफ घने जंगल, एक तरफ पठार तो दूसरी तरफ जल-प्रपात,